10.
हिम तेंदुओं से जुड़ी असामान्य और प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करने के लिए नीतिगत सुझावों हेतु पृष्टभूमि –पत्र

जून 2020

(हिन्दी अनुवादः मार्च 2021)

10. हिम तेंदुओं से जुड़ी असामान्य और प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करने के लिए नीतिगत सुझावों हेतु पृष्टभूमि –पत्र

पृष्ठभूमि

हिम तेंदुए खतरे में हैं। बिशकेक घोषणापत्र 2017 को हिम तेंदुओं वाले 12 देशों का समर्थन प्राप्त है, और इस घोषणा पत्र में स्वीकार किया गया है कि हिम तेंदुओं के लिए खतरे बढ़ रहे हैं, और इसके संरक्षण के लिए नीतियों को विकसित करने और अनेक स्तरों पर क्षमता निर्माण की आवश्यकता है। इसमें जीएसएलईपी सचिवालयकी भूमिका की भी पहचान की गई है कि किस तरह वह सहयोग, सर्वोत्तम पद्धतियों से जुड़ी सूचनाओं का आदान–प्रदान करके, क्षमता निर्माण और सुझावों के माध्यम से हिम तेंदुए के पूरे वास–स्थलों में उसके संरक्षण को और बेहतर बना सकता है।

पिछले कुछ दिनों में जीएसएलईपी को उसकी संचालन समिति के कई प्रतिनिधियों से अनुरोध प्राप्त हुए कि हिम तेंदुओं के विशेषज्ञों के साथ विचार–विमर्श करके एक पॉलिसी ब्रीफ बनाया जाए ताकि ये तय हो कि असामान्य या प्रतिकूल परिस्थितियों में हिम तेंदुओं को कैसे संभाला जाए। हालांकि हिम तेंदुए ज्यादातर, लोगों से छिप कर ही रहते हैं और कभी–कभार ही उनका सामना लोगों और मवेशियों से होता है। इस पॉलिसी ब्रीफ को अन्तर्राष्ट्रीय और रेंज देशें के हिम तेंदुआ विशेषज्ञों और संरक्षणवादियों के कार्यदल ने तैयार किया है। यह दस्तावेज पहले 09 पॉलिसी ब्रीफ 'हिम तेंदुए और पारिस्थितिकी तंत्र संरक्षण फोरम की सिफारिशों के पृष्टभूमि परापत्र (2017)' के श्रेणी में हे जो कि हिम तेंदुए के संरक्षण से संबंध्ति विभिन्न विषयों को संबोधित करता है।

यह श्वेतपत्र जीएसएलईपी सचिवालय के अनुरोध पर कार्यदल द्वारा बनाया गया है, जिसका उद्देश्य उन देशों की सरकारों के लिए एक माध्यम की भूमिका निभाना है जहां हिम तेंदुए पाए जाते हैं, ताकि तेंदुओं के साथ असामान्य या प्रतिकूल परिस्थितियों को संभालने के लिए वे अपनी मानक संचालन प्रक्रियाओं और नीतियों में सुधार या बदलाव कर इन नीतियों में दिए गए दिशानिर्देश सबसे अधुनातन सूचनाओं और वैज्ञानिक साक्ष्यों पर आधारित हैं। इन दिशा–निर्देर्शों का उपयोग स्थानीय समुदायों और अन्य हितधारकों के लिए जागरूकता सामग्री बनाने, और उपयुक्त समुदाय–आधारित संरक्षण पहलों की सहायता के लिए किया जा सकता है।

मवेशियों के शिकार के मामले में हिम तेंदुओं के साथ मानविय संपर्क

शोध से पता चला है कि हिम तेंदुए खुर वाले पहाड़ी वन्य जीवों का शिकार करना पसंद करते हैं, जैसे कि भराल, आइबैक्स, मारखोर और अर्गली, लेकिन मौका मिलने पर ये पालतू मवेशियों को भी शिकार बनाते हैं। **शोध में पाया गया है कि हिम तेंदुए चरागाहों में मवेशियों पर हमला नहीं करते हैं अगर सुरक्षा के पर्याप्त प्रबंध किए गए हों।** परन्तु अगर मवेशी पालक साथ न हों तो मवेशी उनका आसान शिकार बन जाते हैं, खासकर वे मवेशी जो पीछे अकेले रह जाते हैं। हिम तेंदुआ पालतू भेड़, बकरियों, कमजोर घोड़ों, याक और गायों को अपना शिकार बना सकता है। पालतू मवेशियों पर हमले अक्सर ऐसे बाड़ों में होते हैं जिनकी दीवारें नीची होती हैं, या जहां दरवाजे या खिड़कियां मजबूत नहीं होती। हालांकि ऐसे मामले दुर्लभ होते हैं, पर ऐसे एक ही हमले में कई मवेशी मारे जाते हैं।

चरागाहों में हिम तेंदुए द्वारा मवेशियों को मारे जाने की स्थितियों का प्रबंधन

- हिम तेंदुए ऐसे मवेशियों पर कम ही हमला करते हैं, जिनकी सक्रियता से सुरक्षा की जाती हो । लेकिन अगर हिम तेंदुए ने चरागाहों में मवेशियों का शिकार किया हो **तो उचित होगा कि चराई वाले क्षेत्र 4 से 10 दिन के लिए बदल दिए जाएं।** हिम तेंदुए कई दिन तक अपने शिकार के निकट बने रहते हैं, तो उसी इलाके में मवेशियों को चराने से और मवेशियों का शिकार हो सकता है।
- चरागाह **में मारे गए जीवों के अवशेषों के साथ न तो छेड़छाड़ की जानी चाहिए, और न ही उससे मांस लेने की कोशिश की जानी चाहिए।** ऐसा करने से हिम तेंदुए द्वारा और अधिक मवेशियों पर होने वाले जानलेवा हमले और हिम तेंदुओं या उनके परजीवियों में मौजूद गंभीर पशु–जन्य बीमारियों के खतरे को कम किया जा सकता है।

बाड़ों में हिम तेंदुए द्वारा मारे जाने वाले मवेशियों की स्थिति का प्रबंधन

- अगर हिम तेंदुए बाड़ों के अंदर घुस कर मवेशियों का शिकार करते हैं, **तो प्राथमिकता से हिम तेंदुए को बाड़े से या किसी बंद जगह से फौरन बाहर निकलने का मौका दिया जाना चाहिए**। हिम तेंदुए के बाहर निकलने के लिए रास्ता छोड़ें, लोगों को वहां से दूर रखा जाए, और **हिम तेंदुए को बिना किसी जोर–जबरदस्ती के या बिना उसका घेराव किये अपने आप भागने का मौका दें**। अगर हिम तेंदुआ शिकार को खा रहा हो, तो वह उस जगह से निकलने के लिए थोड़ा समय ले सकता है। **हिम तेंदुए कई जानवरों को मारने के बाद अक्सर थक जाते हैं, और उन्हें अपनी थकान मिटाने के लिए और उस जगह से जाने के लिए समय दिया जाना चाहिए। लोग अक्सर उनकी थकान को प्रौढ़ उम्र या कमजोरी का संकेत मान लेते हैं, और पिंजरे आदि में बंद करने की कोशिश करते हैं और सोचते हैं कि उन्हें कैद में रखने से जानवर को मदद मिलेगी।** ऐसा करने की जगह हिम तेंदुए को जितना जल्दी हो सके, वहां से निकलने देना चाहिए।
- **हिम तेंदुए को घेरने या पकड़ने की कोशिश से जहां तक हो सके, बचना चाहिए। ये काम अनुचित तो है ही, साथ ही इससे जानवरों को अत्याधिक तनाव भी हो सकता है, और जानवर और लोगों के घायल होने की आशंका बढ़ जाती है ।** इस प्रकार की कार्यवाही से कानूनी और स्वास्थ्य संबंधी पेचीदगियां भी पैदा हो सकती हैं।
- **हिम तेंदुए जितना अधिक समय बंदी दशाओं में बिताते हैं, उन्हें उतना ही अधिक तनाव होता है जिससे उनके द्वारा खुद को घायल कर लेने की आशंका बढ़ जाती है। जानवर को छोड़ने को प्राथमिकता दी जानी चाहिए, और प्रबंधकों द्वारा स्थानीय लोगों से इस बात के लिए आग्रह करना चाहिए कि वे हिम तेंदुए को बाड़े में रखने के बजाय उसे फौरन जाने दें।**
- **हिम तेंदुओं को पकड़ने और कहीं और छोड़ने से बचना चाहिए। इसके बजाय उन्हें फौरन छोड़ने की हर संभव कोशिश करनी चाहिए। पकड़ने और छोड़ने की प्रक्रिया से जानवर को अनावश्यक तनाव से गुजरना पड़ता है, जिससे उसके लिए खतरा पैदा हो सकता है। इन प्रक्रियाओं से स्थानीय समुदाय हिम तेंदुओं को अनावश्यक कारणों से पकड़ने के लिए प्रोत्साहित होते हैं। इससे जानवर के साथ दुर्व्यवहार होने और उसके घायल होने की संभावना बढ़ती है और उसकी मृत्यु भी हो सकती है।**
- लोगों पर हिम तेंदुओं के हमले बहुत ही दुर्लभ होते हैं। हालांकि **अगर वे अपने आप को घिरा हुआ पाएं, या किसी छोटी सी जगह में फंस जाएं, तो फिर वे खुद को बचाने की कोशिश में मनुष्यों पर हमला कर सकते हैं जिससे लोगों को गंभीर चोट लग सकती हैं।** अगर कोई हिम तेंदुआ किसी बाड़े

में घुस जाता है, तो दरवाजे और निकलने की दूसरी जगहों को खोल देना चाहिए। यह सुनिश्चत करना चाहिए कि रास्ते में कोई बाधा न हो, लोग और पालतू कुत्ते वहां से दूर हटा दिए जाएं और भीड़ को इकट्ठे नहीं होने दिया जाए। इससे हिम तेंदुआ जहां तक हो सकेगा, उस जगह से निकल जाएगा। ध्यान रखें कि कभी कभी हिम तेंदुए को उस जगह से निकलने में कई घंटों का समय लग सकता हैं।

- अगर कोई हिम तेंदुआ किसी बाड़े के अंदर या उसके नजदीक किसी बकरी या भेड़ को मारता है, और वहां से दूर चला जाता है, **तो उसके अवशेषों को बाड़े से एक या दो किलोमीटर दूर,** उस ही दिशा में ले जा कर छोड़ दिया जाए जिधर हिम तेंदुआ गया हो। ऐसा करते समय स्वास्थ्य और सुरक्षा संबंधी एहतियात जरूर बरतें। जहां आवारा कुत्ते न हों, वहां उस मवेशी के अवशेष अपनी गंध छोड़ते जाएंगे, और हिम तेंदुआ उन अवशेषों को संभवतः ढूंढ़ पाएगा। हो सकता है ऐसा करने से हिम तेंदुआ बाड़े की तरफ वापिस लौटेंगे ही नहीं। हिम तेंदुए अपने शिकार के आसपास 2 से 10 दिन तक रह सकते हैं, क्योंकि ये समय शिकार के आकार पर भी निर्भर करता है। इस तरीके को अपनाते समय लोगों की भावनाओं का ध्यान रखा जाना चाहिए, और यदि स्थानीय लोगों की संवेदनाओं को इससे असहजता हो, तो इससे बचना चाहिए। ये बात याद रखी जाए कि जिन परिवारों के मवेशी मारे जाते हैं, उन्हें आर्थिक मुश्किलें तो आती ही हैं, वे अक्सर डर या भावनात्मक क्षति भी महसूस करते हैं।
- जब शिकारी जीव बाड़ों में मवेशियों पर हमला करते हैं, तो वे कई जीवों को मार सकते हैं। **यदि अधिक मवेशी मारे गए हों, तो बेहतर होगा कि हिम तेंदुए के जाने के बाद मवेशियों के अतिरिक्त अवशेष वहां से हटा दिए जाएं।** ऐसा करते समय सुनिश्चित किया जाए कि प्लेग, रैबीज और अन्य गंभीर जानलेवा संक्रमणों जैसे रोगों से बचने के लिए सफाई का पूरा ध्यान रखा जाए।
- किसी बाड़े पर अपने पहले हमले के बाद हिम तेंदुए के वहां अगली रात भी आने की काफी संभवना रहती है। हमले के बाद लगभग एक सप्ताह तक चौकन्ना रहना चाहिए। **बार–बार होने वाले हमलों से बचने के लिए निम्नलिखित कार्रवाइयां की जा सकती हैं:**

  ◊ **चौकीदार कुत्ते:** यदि संभव हो तो 1 से 2 कुत्तों को लम्बी जंजीर से वहां बांधा जाए जहां से हिम तेंदुआ आया था। अगर कुत्तों को साथ में बांधा जाए, तो वे अक्सर बेहतर प्रतिक्रिया करते हैं। जैसे ही कुत्ते भौंकना शुरू करें, फौरन शोर मचा कर रौशनी के यंत्र लेकर कुत्तों के पास पहुंचना चाहिए, वरना उनको भी खतरा हो सकता है।

  ◊ **शोर:** धातु की घंटियां जमीन से आधा मीटर की ऊंचाई पर बाड़े के चारों ओर लटकाई जा सकती हैं जिनके छूने से आवाज हो। इसके अलावा धातु के टुकड़े भी लटकाए जा सकते हैं, जो हवा से हिल कर आपस में टकरा कर आवाज पैदा करते हैं। खाली बोतलें (या पानी से थोड़ी भरी बोतलें) भी हवा के चलने पर 'सीटी' जैसी आवाज पैदा करती हैं जो कि मददगार हो सकती हैं।

  ◊ **रोशनी :** बाड़े के इर्द–गिर्द वाले इलाके में रौशनी रखें। अगर वहां पर बिजली या फ्लैश लाइट आदि न हों, तो धातु के चमकदार टुकड़े या पुरानी डीवीडी जैसी चीजें लटकाई जा सकती हैं, जिनसे चन्द्रमा या तारों की रौशनी परावर्तित होगी। जिन जगहों पर आग लगने का खतरा न हो, वहां कपड़े के टुकड़ों को डीजल में डुबो कर बाड़े के इर्द–गिर्द लटकाया जा सकता है, जिनकी गंध से शिकारी जीव दूर रहेंगे। अगर शिकारी जीवों को रोकने वाली फ्लैश लाइटें लगातार जलने की जगह जलती और बुझती रहें तो इससे भी वह आम तौर पर दूर रहेंगे।

◊ **परिवर्तनः** नियमित रूप से रातों में रखवाली और डराने के तरीकों को बदलना उपयोगी है। हिम तेंदुए तेजी से अनुकूल करते हैं, और अक्सर जल्दी समझ जाते हैं कि किस चीज से उनको खतरा नहीं है। इसलिए उनको डराने की तरकीबों को लगातार बदलते रहना जरूरी है।

हिम तेंदुए द्वारा मवेशी के मारे जाने और लोगों द्वारा उसे पकड़े जाने की स्थिति में होने वाले संघर्ष से बचने के लिए आम सलाहः

- ऐसी स्थिति में जहां हिम तेंदुआ फंस गया हो या सीमित हो गया हो, वहां यह जरूरी है कि भीड़ को इकट्ठा न होने दिया जाए, ये सुनिश्चित किया जाए कि हर कोई शांत रहे, ताकि जानवर को और अधिक तनाव न हो। बाड़े के आसपास बातचीत न करें, क्योंकि ज्यादा गहमागहमी से मवेशी भी, और फंसा हुआ हिम तेंदुआ भी मुश्किल में पड़ सकते हैं ।
- जितना जल्दी हो सके, समुदाय के नेताओं के साथ विचार–विमर्श किया जाना चाहिए। **हिम तेंदुए को जल्द से जल्द छोड़ने के सिलसिले में, लोगों को राजी करने के लिए** समुदाय के नेताओं का सहयोग लिया जाना अक्सर उपयोगी होता है।
- हिम तेंदुए को पकड़े बिना, प्रभावित लोगों को सरकार द्वारा मुआवजा दिया जाना सुनिश्चित किया जाना चाहिए। हिम तेंदुए द्वारा पहुंचाए गए नुकसान का आकलन गांव के प्रमुख लोगों की मौजूदगी में किया जाना चाहिए, ताकि उपयुक्त मुआवजे का प्रबंध किया जा सके। यदि एक–तरफा आकलन होता है तो उससे स्थानीय लोगों में अविश्वास की भावना पनप सकती है। सभी आवश्यक औपचारिकताएं पूरी की जानी चाहिए, ताकि राज्य के नियमों के अनुसार मुआवजे का प्रावधान जल्द से जल्द हो सके।
- लोगों का अक्सर अपने मवेशियों के साथ भावनात्मक जुड़ाव होता है, और उनके मारे जाने की स्थिति में परिस्थिति काफी उत्तेजक हो सकती हैं। ऐसे में यह बहुत जरूरी है कि परिस्थिति को धीरज, एहतियात और संवेदनशीलता के साथ संभाला जाए।
- **अतीत में हो चुकी घटनाओं और भविष्य की योजनाओं का आकलन करना बहुत जरूरी हैः** अक्सर एक समुदाय को अतीत में हुए ऐसे हादसों का अनेक बार भविषय में भी सामना करना पड़ता है जिनका आकलन आवश्यक है ।
- **हिम तेंदुओं द्वारा बार–बार होने वाले हमलों को रोकने के लिए समुदाय की सहायता की जानी चाहिए।** मवेशियों वाले सभी बाड़ों की तुरंत जांच–पड़ताल की जानी चाहिए, ताकि ऐसे बाड़ों की पहचान की जा सके जहां हिम तेंदुओं के हमलों की आशंका ज्यादा है, और मिल–जुल कर इन्हें ऐसा बनाने में मदद करें ताकि तेंदुआ उनके अंदर न घुस सके। ऐसी चर्चाओं और योजनाओं से समुदाय और प्रभावित परिवार के भरोसे को हासिल करने में मदद मिलती है। ऐसी सभी कोशिशों में सहायता के लिए स्थानीय गैर–सरकारी संगठनों को भी शामिल किया जा सकता है।
- **समुदाय द्वारा पकड़े गए हिम तेंदुए को अपने कब्जे में लेने से बचना चाहिए, और जल्द से जल्द उसे छोड़ने के प्रबंध करने चाहिए, क्योंकिः**

- ◊ यदि आप समुदाय द्वारा पकड़े गए किसी जीव को अपने कब्जे में लेते हैं, तो लोगों को लगता है कि उन्हें प्रबंधकों से मदद इसलिए मिली, क्योंकि उन्होंने हिम तेंदुए को पकड़ा था। इस कारण वे फिर से ऐसा करने के लिए प्रेरित होते हैं।
- ◊ इससे दूसरे समुदायों को भी अपने स्तर पर हिम तेंदुओं को पकड़ने के लिए बढ़ावा मिलेगा।
- ◊ इससे मवेशियों के मारे जाने का पूरा दोष हिम तेंदुए पर मढ़ जाता है, और लोग जानवर के साथ दुर्व्यवहार कर सकते हैं, उसे चोट पहुंचा सकते हैं, और उसकी जान भी जा सकती है।
- ◊ इससे मादा हिम तेंदुआ अपने बच्चों से अलग हो सकती है।
- ◊ किसी हिम तेंदुए को बंधक रखना काफी खर्चीला होता है। यदि कोई हिम तेंदुआ घायल भी हो जाए, तो भी पहाड़ों में वह खुद अपनी देखरेख काफी अच्छे ढंग से कर सकता है।
- ◊ हालांकि वन्य जीवों की जिम्मेदारी लोगों और प्रबंधकों, दोनों की मिली–जुली है, ऐसी स्थिति में ये उत्तरदायित्व केवल प्रबंधकों और सरकार का बनकर रह जाता है।

- देय मुआवजे का जल्दी भुगतान करने से लोगों और पशु पालकों के **संरक्षण–अनुकूल व्यवहार** को बढ़ावा दिया जा सकता है। यदि अच्छे आचरण वाले लोगों की सार्वजनिक तौर पर प्रशंसा की जाए और स्थानीय मीडिया भी सकारात्मक भूमिका निभाए तो इससे काफी लाभ हो सकता है।
- समुदाय–आधारित पहलों के कई मॉडलों से मवेशियों के शिकार से जुड़ी प्रतिकूल परिस्थितियों के प्रबंधन में मदद मिल सकती है। ऐसे कुछ मॉडल हैं– सामुदायिक मवेशी बीमा कार्यक्रम, सहयोगात्मक शिकारी–जीव सुरक्षित बाड़ा, स्थानीय समुदायों के साथ संरक्षण साझेदारियां निर्मित करने के लिए आजीविका और अन्य प्रोत्साहन–आधारित कार्यक्रम, आदि। जीएसएलईपी सचिवालय साझेदारी सिद्धांत पर प्रबंधकों और प्रैक्टिशनरों के समुदाय–आधारित संरक्षण कार्यक्रम के प्रशिक्षण में मदद करता है। ऐसे प्रशिक्षणों के आयोजन के लिए जीएसएलईपी कार्यक्रम से अनुरोध किया जा सकता है।

हिम तेंदुओं को पकड़ने और स्थानान्तरण करने के सिलसिले में कुछ सुझावः

- इस बात का कोई वैज्ञानिक सबूत नहीं है कि हिम तेंदुओं को पकड़ कर दूसरी जगह स्थानांतरित करना मवेशियों के शिकार को कम करने में मदद करता है। हिम तेंदुओं को अपने मूल रहवास से हटाने से उनकी मौजूदा सामाजिक संरचना प्रभावित हो सकती है, जैसे कि मादा पर निर्भर बच्चे अपनी मां से अलग हो सकते हैं या प्रभुत्वशाली नर अपने इलाके से हटाए जा सकते हैं।
- लगभग सभी वयस्क हिम तेंदुए कभी–कभी मवेशियों का शिकार कर लेते हैं। अगर मवेशियों के मारे जाने के हर मामले में हिम तेंदुए को पकड़ कर दूसरी जगह भेजा जाएगा, तो ऐसे में हिम तेंदुए विलुप्त हो जाएंगे।
- पकड़ कर दूसरी जगह छोड़े जाने की प्रक्रिया में जानवर को अत्यंत तनाव से गुजरना पड़ता है, और उसे चोट लगने और उसकी अकाल मृत्यु का खतरा भी बढ़ जाता है।
- प्रबंधकों द्वारा हिम तेंदुए को बार बार पकड़ने और स्थानांतरित करने से, स्थानीय लोग भी बाड़ों में घुसने वाले हिम तेंदुओं को पकड़ना और उनके साथ र्दुव्यवहार करना शुरू कर सकते हैं।
- यदि हिम तेंदुओं को किसी नए इलाके में छोड़ा जाता है, उनकी मृत्यु हो सकती है या संघर्ष बढ़ सकता है क्योंकि हिम तेंदुआ वापिस अपने स्थान जाने का प्रयत्न कर सकता है।

किसी घायल हिम तेंदुए से सामना होने परः

- **बेहतर होगा कि उसे अकेला छोड़ कर वहां से दूर हट जाया जाए।** अन्य जंगली जीवों की ही तरह हिम तेंदुए भी अपने आप में काफी बदलाव लाने की योग्यता रखते हैं। कभी कभी पहाड़ी इलाकों में अपने से बड़े आकार वाले जीवों का शिकार करने के दौरान हिम तेंदुए घायल हो जाते हैं, परंतु ज्यादातर मामलों में वे खुद ही पूरी तरह ठीक भी हो जाते हैं। देखा गया है कि एक आंख खराब हो जाने या कुछ नाखून टूटने के बावजूद ये न सिर्फ जिंदा रहते हैं, बल्कि ठीक से शिकार और प्रजनन भी कर पाते हैं। नरों के एक–दूसरे से लड़ने से भी इन्हें अक्सर चोटें लगती हैं। कभी–कभी कोई जख्मी हिम तेंदुआ अगर कहीं मर जाता है तो कुछ ही हफ्तों में कोई दूसरा हिम तेंदुआ उसके इलाके पर कब्जा कर लेता है।

यदि मां द्वारा छोड़ दिए गए बच्चों से सामना हो तोः

- मादा हिम तेंदुआ का काफी समय अपने बच्चों से दूर बीतता है, पर शिकार के दौरान, गश्त लगाते हुए, वे यह सुनिश्चित करती हैं कि उनके बच्चे शिकारियों से सुरक्षित रहें। कभी–कभी मां 20 घंटे तक के लिए उन्हें अकेला छोड़ देती है। ऐसा वे तब से कर सकती हैं जब उनके बच्चे सिर्फ एक सप्ताह की उम्र के हों। कभी–कभी लोगों को हिम तेंदुए के बच्चे मिलते हैं और वे यह सोचकर उन्हें बचाने की कोशिश करते हैं कि शायद उनकी मां मर गई है। ऐसा करने से पूरी तरह बचना चाहिए।
- अगर बच्चों के आसपास उनकी मां न हो, तो उस इलाके से फौरन दूर चले जाना चाहिए। जहां तक हो सके, न तो पास कैमरे लगाएं, और न ही कोई व्यक्ति उस जगह पर इंतजार करे। हिम तेंदुओं की नजर बहुत अच्छी होती है, और इंसानों की मौजूदगी के कारण मां को अपने बच्चों के पास लौटने में बाधा हो सकती है।

गैर–पहाड़ी पर्यावासों में हिम तेंदुओं से सामना होने परः

- कभी–कभी हिम तेंदुए एक पहाड़ से दूसरे पहाड़ तक पहुंचने के लिए समतल पठारों, चौड़ी घाटियों या घास के मैदानों जैसे पर्यावासों को पार करते हैं। ऐसा करते समय वे 60 किलोमीटर या उससे भी ज्यादा तक सफर कर सकते हैं। हिम तेंदुए पहाड़ों में रहने के लिए अनुकूलित हैं, और खतरा महसूस होने पर ये या तो खड़ी चट्टानों पर चले जाते हैं या छिप जाते हैं। खुले मैदानी इलाकों में ऐसी जगहें नहीं होती जहां हिम तेंदुए छिप जा सकें। परिणामस्वरुप वे असामान्य व्यवहार करते हैं और वहां से भागने की कोशिश करते हैं। अगर गैर–पहाड़ी पर्यावास में हिम तेंदुओं से सामना हो जाए, तो उन्हें परेशान नहीं करना चाहिए। इससे भी महत्वपूर्ण बात ये है कि उनकी तस्वीरें लेने या किसी अन्य कारण से उनका पीछा नहीं किया जाना चाहिए। संभवतः ये उसी रात वहां से निकल जाएंगे, क्योंकि जैसा शोध में पाया गया है, ये अक्सर रात में सफर करते हैं और दिन में आराम करते हैं।

ऐसी खास परिस्थितियां, जिनमें हिम तेंदुओं को डार्ट लगा कर बेहोश किया जा सकता हो:

- कोई हिम तेंदुआ किसी शिकारी के फंदे में फंस गया हो, और उसे बिना बेहोश किए रिहा न किया जा सकता हो।
- कोई हिम तेंदुआ भटक कर किसी शहर में पहुंच गया हो, और उसके लिए अपने बल पर, अपने पर्यावास तक लौटना असंभव हो गया हो।

हिम तेंदुए का शवों का सामना:

- **अप्रशिक्षित लोग ऐसे शव को न छुएं।** हिम तेंदुए से गंभीर पशु–जन्य बीमारियां इंसानों तक पहुंच सकती है।
- लोगों को ऐसी घटना के बारे में सबसे नजदीकी सरकारी कर्मचारियों को बताने के लिए प्रेरित करना चाहिए, जो **किसी ऐसे पशुचिकित्सक से स्थिति को संभालने का अनुरोध करें, जिसके पास निजी सुरक्षा उपकरण हों।**
- यदि अप्रशिक्षित लोग वन्यजीव के शव को हाथ लगाते हैं तो उससे पोस्टमॉर्टम की प्रकिया और उससे प्राप्त होने वाली जानकारी प्रभावित हो सकती हैं।

हिम तेंदुओं का असामान्य ऊंचाइयों पर या नई जगहों पर मिलना:

- हिम तेंदुए अलग–अलग ऊंचाइयों पर पाए जाते हैं। ये अपने वास–स्थल में कहीं समुद्र तल से सिर्फ 800 मीटर की ऊंचाई पर मिलते हैं, तो कुछ दूसरी जगहों पर 5300 मीटर की ऊंचाई पर पाए जाते हैं। हिम तेंदुओं के साथ मनुष्यों का आमना–सामना कम ही होता है। लेकिन आजकल ज्यादातर लोगों के पास स्मार्ट–फोन और बेहतर कैमरा होते हैं, जिसके कारण हिम तेंदुए दिखने की खबरें पहले से ज्यादा मिलती हैं।
- हिम तेंदुए कम ऊंचाई पर, सड़कों के आसपास, और इंसानी बस्तियों के निकट कम ही दिखते हैं, परन्तु इनका यहां दिखना असामान्य नहीं है।
- जैसा कि बाकी वन्य जीवों के साथ किया जाता है, हिम तेंदुओं को भी सुरक्षित दूरी से देखना चाहिए, और अनावश्यक शोर या हलचल ना करते हुए उनके सामान्य व्यवहार में कम से कम दखल डालना चाहिए ।
- आज के समय में ऐसे जागरूकता कार्यक्रमों की आवश्यकता है, जो स्थानीय लोगों को शांत बने रहने, न घबराने और सर्वोत्तम पद्धतियों और मानक संचालन प्रक्रिया को समझने के लिए बढ़ावा दें। प्रतिकूल परिस्थितियों के प्रबंधन, नियम–कायदों की जानकारी, और जानवरों को पकड़ने और उनकी सही देखरेख तथा समुदाय–आधारित संरक्षण से जुड़े प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रबन्धकों के लिए काफी उपयोगी रहेंगे। इनसे हिम तेंदुओं के साथ होने वाली असामान्य और प्रतिकूल परिस्थितियों का सुरक्षित और सही तरीके से प्रबंधन किया जा सकेगा। जीएसएलईपी सचिवालय और तकनीकी सहायक संगठन, हिम तेंदुए के पूरे वास–स्थल क्षेत्र में प्रशिक्षण कार्यक्रमों के विकास और वितरण में मदद कर सकते हैं। प्रबन्धकों के लिए, असामान्य और प्रतिकूल परिस्थितियों में हिम तेंदुओं को सुरक्षित और उचित तरीके से संभालने में प्रशिक्षण कार्यक्रम बेहद उपयोगी साबित हो सकते हैं ।

सुझावित ग्रंथ सूची

- Global Snow Leopard and Ecosystem Protection Program. (2017). Community-based Conservation. In: Background papers for Snow Leopard and Ecosystem Conservation Forum Policy Recommendations. Bishkek, Kyrgyz Republic. Pp. 23-24.
- Athreya, V., Odden, M., Linnell, J. D., & Karanth, K. U. (2011). Translocation as a tool for mitigating conflict with leopards in human-dominated landscapes of India. *Conservation biology*, *25*(1), 133-141.
- Jackson, R. M., & Wangchuk, R. (2004). A community-based approach to mitigating livestock depredation by snow leopards. *Human dimensions of wildlife*, *9*(4), 1-16.
- Johansson, Ö., Malmsten, J., Mishra, C., Lkhagvajav, P. And mccarthy, T.M. 2013. Reversible immobilization of free-ranging snow leopards (*Panthera uncia*) using a combination of Medetomidine and Tiletamine-Zolazepam. Journal of Wildlife Diseases DOI: 10.7589/2012-02-049.
- *Johansson, Ö., McCarthy, T., Samelius, G., Andrén,* H., Tumursukh, L., & Mishra, C. (2015). Snow leopard predation in a livestock dominated landscape in Mongolia. *Biological Conservation*, *184*, 251-258.
- Johansson, Ö., Rauset, G. R., Samelius, G., McCarthy, T., Andrén, H., Tumursukh, L., & Mishra, C. (2016). Land sharing is essential for snow leopard conservation. *Biological Conservation*, *203*, 1-7.
- Karlsson, J., & Johansson, Ö. (2010). Predictability of repeated carnivore attacks on livestock favours reactive use of mitigation measures. *Journal of Applied Ecology*, *47*(1), 166-171.
- Mishra, C., Allen, P., McCarthy, T. O. M., Madhusudan, M. D., Bayarjargal, A., & Prins, H. H. (2003). The role of incentive programs in conserving the snow leopard. *Conservation Biology*, *17*(6), 1512-1520.
- Mishra, C. 2016. The PARTNERS Principles for community-based conservation. Snow Leopard Trust, Seattle. 180 pp. ISBN: 978-0-9773753-1-8; ISBN: 978-0-9973753-0-1 (e-book)
- Mishra, C., Redpath, S.R. and Suryawanshi, KS. 2016. Livestock predation by snow leopards: conflicts and the search for solutions. Pp. 59-67 in: mccarthy, T. And Mallon, D. (eds.). Snow leopards of the world. Elsevier.
- Mishra, C., Young, J.C., Fiechter, M., Rutherford, B. And Redpath, S.M. 2017. Building partnerships with communities for biodiversity conservation: lessons from Asian mountains. J*ournal of Applied Ecology* doi: 10.1111/1365-2664.12918
- Suryawanshi, K. R., Bhatnagar, Y. V., Redpath, S., & Mishra, C. (2013). People, predators and perceptions: patterns of livestock depredation by snow leopards and wolves. *Journal of Applied Ecology*, *50*(3), 550-560.

प्रमुख योगदान

और्यान जोहान्सन, चारूदत्त मिश्रा, अजय बिजूर, बयाराजार्गल अवांत्सेरेन, गोपाल खनल, जस्टीन शांति एलक्जैंडर, कौस्तुभ शर्मा, कुबानिचबेक जुमाबाइ ऊलू, कुलभूषण सिंह सूर्यवंशी, मुहम्मद अली नवाज, गुस्तफ समेलियस

अनुवादः दीपशिखा शर्मा, अतुल आर्य, कौस्तुभ शर्मा